P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारत और नेपाल के सांस्कृतिक, राजनीतिक सम्बन्ध : एक सिंहावलोकन

सुधाकर लाल श्रीवास्तव
एसोसिएट प्रोफेसर,
इतिहास विभाग,
दी0द0उ0गो0 विश्वविद्यालय,
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

सांस्कृतिक पृष्ठभूमि समान होने से भारत और नेपाल के सम्बन्ध मधुर रहे है। राजतंत्र की समाप्ति के बाद नेपाल की राजनैतिक दशा बदलने से इन सम्बन्धों की दिशा और दशा बदलनी स्वाभाविक है। परन्तु प्राचीन नेपाल की ओर दृष्टि डालते है तो दोनों जगह एक ही समाज दिखायी पड़ता है, जिसमें आज की सीमाएं लुप्त हो जाती है और एक अखण्ड भारत माता या नेपाल माता ही दिखायी देती है। जब हम इन देशों के सम्बन्धों की बात करते है तो हमारे सामने दो चित्र उभरते है एक तो वह सांस्कृतिक भारत है जो आज के उत्तरी अफगानिस्तान की बक्षु नदी की घाटी जिसे बल्ख था वाह्लीक कहा जाता है से लेकर दक्षिण में सेतुबन्ध रामेश्वरम् विस्तृत या तो दूसरा राजनीतिक भारत है जिसकी सीमाएं इतिहास के साथ बदलती रही हैं। आज उस सांस्कृतिक भारत में यदि अफगानिस्तान को जोड़ ले तो राजनीतिक दृष्टि से सार्क या दक्षेस की कल्पना पूरी हो जाती है जिसे प्राचीन काल में जम्बूदीप कहा जाता था, अशोक के शिलालेखों में उसके साम्राज्य में यवन तथा कम्बोज शामिल थे। नेपाल में गोरखा राज्य की स्थापना के बाद पृथ्वी नारायण शाह ने नेपाल का एकीकरण कर राजतंत्र की स्थापना की थी उन्होंने नेपाल की सीमा विस्तार कर इसे एक अखण्ड स्वरूप प्रदान किया कालान्तर में नेपाल में विभिन्न राजनैतिक परिवर्तन होते रहे है और 21 दिसम्बर 1768 में नेपाल में राजतंत्र की विधिवत स्थापना के बाद छोटे–छोटे सामन्तवादी राज्यों पर वियज हासिल करने के बाद नये नेपाल का स्वरूप प्रस्तुत हुआ।

यह शोध आलेख भारत–नेपाल सम्बन्धों का लेखा जोखा प्रस्तुत करते हुए तथा भारत नेपाल सम्बन्धों की संवेदनशीलता को देखते हुए इनके सामाजिक सांस्कृतिक सम्बन्धों और पारस्परिक निर्माता के क्षेत्रों के अन्तः सूत्रों को प्रकाश में लाने के लिए अकादमिक जगत का ध्यान आकर्षित करना है।

मुख्य शब्द : पृथ्वीनारायण शाह, काठमाण्डू, गोरखा, शाहवंश, कोट हत्याकाण्ड जंगबहादुर राणा, गिरिजा प्रसाद कोइराला, के0वी0एस0 ओली।

प्रस्तावना

ईस्ट इण्डिया कंपनी द्वारा नेपाल के सीमावर्ती राज्यों पर विजय हासिल करने के बाद नेपाल और कंपनी में शत्रुता हो गयी। इसकी पराकाष्ठा 1815–16 में आंग्ल नेपाल युद्ध के रूप में हुयी, अन्ततः सुगौली की सन्धि के बाद तराई के कुछ क्षेत्रों तथा सिक्किम के क्षेत्र को ब्रिटिश कंपनी को सौप दिया गया। नेपाल अंग्रजों के प्रभाव में आ गया, यद्यपि ब्रिटिश सरकार ने नेपाल के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नही किया, उत्तर की ओर हिमालय के राज्य अंग्रेजों की सीमावर्ती नीति के अन्तर्गत आते थे, इस ओर ब्रिटिश शासकों को सबसे बड़ा भय तिब्बत पर रूसी अधिपत्य का था। 17 मार्च 1950 को भारतीय संसद में पं0 नेहरू ने कहा था कि जहां तक एसियायी गतिविधियों का प्रश्न है, नेपाल पर सम्भावित कोई भी आक्रमण अवश्यम्भावी रूप से भारत की सुरक्षा के लिए खतरा होगा।[1] लेकिन राजेन्द्र प्रसाद ने कहा था कि नेपाल पर किये जाने वाले किसी भी आक्रमण को भारत सहन नही कर सकता।[2]

भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासनकाल में अंग्रेजों ने नेपाल को हराकर 1816 ई0 में सुगौली की सन्धि के लिए वाध्य किया, इस सन्धि के अनुसार नेपाल के काफी हिस्से ईस्ट इण्डिया कंपनी के हिस्से में आ गये। यद्यपि नेपाल के आन्तरिक मामले में इण्डिया कंपनी ने हस्तक्षेप नही किया और वहा राजाओं का निरकुंश शासन चलता रहा किन्तु विश्व के अन्तिम हिन्दू राजा ज्ञानेन्द्र का ताज मई 2008 में उस समय छिन गया जब संविधान सभा ने औपचारिक रूप से 240 साल पुरानी राजशाही को समाप्त करने के लिए मतदान किया था और उन्हें एक सामान्य नागरिक के रूप में तब्दील कर दिया।[3]

यह नेपाल में बहुत बड़ा राजनीतिक परिवर्तन था। जब कि 1769 में 80 से अधिक छोटे–छोटे राज्यों को जीतकर आधुनिक नेपाल के जनक महाराजा पृथ्वीनारायण शाह ने नेपाल को एकीकृत किया था, जो भारत में चित्तौणगढ के सिसोदिया वंश से संबंधित थे।[4] उन्होंने कहा था 'यह देश दो चट्टानों के बीच खिले हुए फूल के समान है, हमे चीनी सम्राट के साथ मित्रतापूर्ण सम्बन्ध रखने चाहिए तथा हमारे सम्बन्ध दक्षिणी सागरों के सम्राट से भी मधुर होने चाहिए।' नेपाल का दक्षिणी भाग यानी तराई और उत्तरी भारत एक ही समान प्रतीत होते है इतनी समीपता दो प्रभुसत्ता वाले देशों में कठिनाई से ही देखने को मिलेगी।[5] भारतीय उप महाद्वीप के हिमायली तलहटी में बसे नेपाल में मनुष्यों के आवागमन का स्पष्ट प्रमाण 9000 ई0 पूर्व में प्राप्त होता है।[6] भारत और नेपाल शताब्दियों से एक–दूसरे के साथ सामाजिक सांस्कृतिक राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से इस प्रकार अनुस्यूत रहे है कि उनके सम्बन्धों का राजनीतिक स्तर पर मूल्यांकन करना अनुपयुक्त होगा, हिन्दी और नेपाली दोनों भाषाओं की लिपि देवनागरी उनकी एकात्मकता और अखण्डता की पुष्टि करते है। नेपाल की भौगोलिक स्थिति में भारतीय धर्म जाति संस्कृति समाज इतना घुला मिला है कि नेपाल का दक्षिणी भाग तराई और उत्तरी भाग एक समान प्रतीत होते है।[7]

अष्टाध्यायी, महाभारत, महाभाष्य, वृहतसंहिता, राजतरिगिणी, कौटिल्य के अर्थशास्त्र हरिषेण की प्रयागपरास्ति, अश्वघोष की बज्र सूची, आचार्य शनिदेव कृति बोधि–चर्यावतार[8] संस्कृत भाषा के भूमिदान, मंगल बाजान एवं पशुपति रत्नेश्वर स्थापना दान, क्षेत्राभिलेख, शाडरभूमि, भावन अभिलेख आदि सभी भारत–नेपाल सम्बन्ध पर प्रकाश डालते है, नेपाल की राजनधानी काठमाण्डू उपत्यका से नवपाषाण प्राप्त हुए है जो भारतीय सभ्यता के समकालीन है।[9] एसिया में सहसाब्यिों से भारत नेपाल का प्रागैतिहासिक सम्बन्ध रहा है।[10] रामकथा एवं कृष्णकथा में भी भारत और नेपाल के नागरिकों को धर्म और आस्था के समान प्रतीकों से प्रभावित और अभिप्रेरित किया गया है। रामायण काल में यही जनकपुरी के राजा धीरध्वज ने अपनी पुत्री का विवाह अयोध्या के राजकुमार श्रीराम से किया था। महाभारत काल में यहां के युवकों ने महायुद्ध में पाण्डव की ओर से युद्ध किया था। महात्मागौतम बुद्ध का जन्म भी नेपाल के लुम्बिनी में हुआ था, नेपाल में सबसे पहले प्रवेश करने वाली जाति किरात है इसके राजा जितेदस्ती (520 ई0पू0) के समय भगवान बुद्ध नेपाल गये थे,[11] इनके उपदेश सुनकर किरात जाति बौद्ध हो गयी थी, काठमाण्डू से 20 मील पूर्व स्वयंभू पूर्वत के पश्चिम 'नमुरा' नामक स्थान पर शुच्छाग्न नामक स्तूप है, जिसे बुद्ध की नेपाल यात्रा का स्मारक माना जाता है, यहां बुद्ध ने निवास किया था।

नेपाल संस्कृति में भारतीय धर्म एवं देवी–देवताओं से सम्बन्धित देवी देवताओं की मत्वपूर्ण सूचनाएं प्राचीनकाल से वर्तमान तक प्रवाहयमान है, जो प्राचीन नेपाली संस्कृत अभिलेखों से प्राप्त होती है, नेपाल में 89 संस्कृत अभिलेखों[12] को सग्रहीत कर प्रकाशित किया गया है, सभी अभिलेख गुप्तकालीन लिपि एवं संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण है। अभिलेखों में शिव की प्रधानता है। लाजनघाट नामक स्थान से 466 ई0 में स्थापित शिवलिंग प्राप्त हुआ है।[13] पांचवीं शताब्दी ई0पू0 काठमाण्डू की सुरम्यघाटी में गोपाल, कीरथ लिच्छवि आदि छोटे–छोटे राज्य थे। सम्राट अशोक की पुत्री का विवाह भी नेपाल के पर्वतीय क्षेत्र के सम्राट परिवार में हुआ था।[14] हर्ष के साम्राज्य में भी नेपाल सम्मिलित था। सम्राट अशोक के पहले से ही नेपाल भारतीय इतिहास का अंग रहा हे। समुद्र गुप्त के प्रयाग प्रशस्ति में भी नेपाल कामरूप और कतृपुर आदि गुप्त साम्राज्य का अंग बताया गया है।[15] गुप्तों के बाद मौखरियों के अभिलेखों से ज्ञात होता है कि उसने नेपाल के अधिकांश भाग को अधिकृत किया था। अगर हम लिच्छवि काल का इतिहास देखें तो इसके प्रथम राजा मानदेव थे, जिनका चांगुनारायण अभिलेख मिलता है, वह अपने को स्वतंत्र कर 464 ई0 में यह शिलालेख लिखवाया था, लिच्छवि काल के सबसे महत्वपूर्ण राजा शिवदेव थे। शिवदेव के बाद उदय देव ने ही काठमाण्डू में एक सचिवालय बनवाया था, जिसका नाम कैलाशकूट भवन रखा गया। उदय देव के पुत्र नरेन्द्र देव का 641 ई0 का तिथांक्ति अभिलेख को नेपाली बंशावलियों में मानदेव सवंत कहा गया है आगे चलकर यही नेपाली सवंत के नाम जाना गया जो 476 ई0 में प्रारम्भ होता है।

सत्ता का सबसे प्राचीन महत्वपूर्ण केन्द्र नेपाल घाटी (आज काठमाण्डू) थी। इस घाटी पर 400 ई0 से लेकर 879 ई0 तक लिच्छवि वंश का शासन था तत्पश्चात् दो शताब्दी तक ठकुरी शासकों का अधिकार था। भारत के उत्तर में स्थित पर्वतीय हिमाली प्रदेश और मध्यवर्ती घाटिया तथा तराई प्रदेश आधुनिक विश्व का एक मात्र हिन्दू राष्ट्र था जहां विभिन्न जातियों के लोग निवास करते थे, जिसमें सबसे पुरानी जाति नेवार थी जो मंगोलो से मिलते–जुलते थे जिन पर शैव और बौद्ध धर्म का प्रभाव दिखता है। देश का अधिकांश वाणिज्य व्यापार इन्ही पर निर्भर था प्रमुख जातियों में गोरखा के अलावां क्षत्रिय जातियों में ठकुरी, खश, शाह, सेन, मल्ल मगर तथा राई, सुनार तमांग, दुरस तक्ले धौतियाल के अलावा च्यामे गाइने, नाड का भी उल्लेख है। नवी शताब्दी में प्राकृतिक अड़चनों तथा कठिनाइयों में नेपाल छोटे–छोटे राज्यों में विभक्त हो गया। 878 ई0 में नेपाल का तिब्बत से टकराव होने के नाते नेपाल एक स्वतंत्र देश के रूप में उभरा था।

11वीं शताब्दी में गुणाकामदेव नामक शासक ने काठमाण्डू, पाटन और शंकु नगरी का निर्माण किया था। 13वीं शताब्दी के प्रारम्भ में काठमाण्डू पर मल्ल शासकों का अधिकार हुआ जो 1467 में तत्कालीन राजा यक्षमल्ल द्वारा राज्य को अपने तीन पुत्रों में बांट दिया गया, जिसके फलस्वरूप भटगांव, काठमाण्डू और पाटन स्वतंत्र हो गये। काठमाण्डू के उत्तर में स्थित गोरखा राज्य सबसे महत्वपूर्ण था, पहले यह खनक समुदाय के राजा का शासन था किन्तु 1559 में द्रव्यशाह ने इसे जीतकर यहां शाह वश का शासन स्थापित किया। शाह शासकों को नेपाल में शरण लेने वाले राजपूत सरदारों का वशंज माना जाता है। जिसकी पुष्टि राजस्थानी इतिहासकारों द्वारा भी की गयी है, जिसमें कहा गया है कि शाह लोग चित्तौण

शासक समर सिंह के पुत्र के वशंज थे, समर सिंह की मृत्यु के बाद दूसरे पुत्र से शाहवंश की स्थापना हुयी जो सिसोदिया वंश से भी सम्बन्धित थे।[16]

गोरखा शासक रामशाह के समय चित्र विलास द्वारा निर्मित राजवशांवली में भी शाह शासकों को मेवाण का बताया गया है। पर्वतीय भाषा में लिखित एक दूसरी वशांवली में भी शाह शासकों के पूर्वजों को चित्तौण का सूर्यवंशी शासक बताया गया है। द्रव्यशाह के पश्चात् उसका पुत्र पुरन्दर शाह ने भी अपने 35 वर्षीय शासन काल में सीमा विस्तार किया था, पुरन्दर शाह के पश्चात् उसका पुत्र क्षेत्रशाह उसके पश्चात् रामशाह ने 27 वर्षो तक गोरखा राज्य पर शासन किया। रामशाह की मृत्यु के बाद डम्बर शाह (1633 से 1642) तथा कृष्णशाह (1642 से 1653) और रूद्र शाह (1655 से 1671) तक गोरखा शासक रहे, रूद्रशाह की मृत्यु के बाद उसका सबसे बड़ा पुत्र पृथ्वीपति शाह 47 वर्षो तक शासक रहा, तत्पश्चात् उसका पौत्र नरभूपाल (1716–1742 तक) 26 वर्षो तक शासन किया, उसके बाद पृथ्वीनारायण शाह का शासन 1742 में प्रारम्भ हुआ। पृथ्वी नारायण शाह ने ही सर्वप्रथम नेपाल विजय का कार्य प्रारम्भ कर नेपाल को आधुनिक राष्ट्र के रूप में संगठित किया, यह कार्य काफी कठिन तथा दुरूह था, क्यों नेपाल घाटी में पश्चिम में चौबीसी राज्य समूह तथा उसके आगे पश्चिम में ही वाइसी राज्य समूह स्थित थे, बाइसी और चौबीसी राज्य किसी समूह या गुट का घोतक नही बल्कि गण्डक नदी को आधार बनाकर भौगोलिक दृष्टि से राज्यों का विभाजन था। गोरखा राज्य के सीमित संसाधनों की तुलना में घाटी के राज्य अधिक शक्तिशाली थे। पृथ्वी नारायण शाह ने सबसे पहले नवाकोट पर अधिकार करने का प्रयास किया क्योंकि यहा उसके पिता नरभूपाल असफल प्रयास कर चुके थे। पृथ्वीनारायण शाह 1742 से 1775 तक युद्धों में लगे रहे। नेपाल का भूभाग 80 स्वतंत्र राज्यों में विभाजित था।[17] पृथ्वी नारायण शाह ने अपने अथक प्रयास और दृढ़ संकल्प से 25 वर्षो में नेपाल का एकीकरण किया। पृथ्वी नारायण शाह की मृत्यु के बाद उनका ज्येष्ठ पुत्र प्रताप नारायण शाह अन्तिम गोरखा शासक था जिसने राजा के सभी अधिकारों का प्रभावशाली ढंग से उपयोग किया। उसके बाद अल्पवयस्क राजाओं की पंक्ति खड़ी हो गयी। प्रताप सिंह शाह के बाद रणबहादुर शाह ने अपनी प्रिय पत्नी कान्तती देवी की इच्छानुसार गीर्वाण युद्ध विक्रम शाह के लिए पद त्याग कर वाराणसी में शरण लिया। यहीं से ब्रिटिश शासन का नेपाल में हस्तक्षेप बढ़ा और कम्पनी सरकार से 1801 में सन्धि के अनुसार काठमाण्डू में एक ब्रिटिश रेजीडेन्स रखा गया।

रणबहादुर शाह का सलाहकार भीमसेन थापा अपनी प्रतिभा से मुख्तियार के पद तक पहुंचकर आंग्ल नेपाल युद्ध का उत्तरदायी बना किन्तु राजा राजेन्द्र विक्रम शाह ने उसे आत्महत्या के लिए मजबूर कर दिया, परिणाम स्वरूप नेपाल की राजनीति में अस्थिरता का दौर प्रारम्भ हो गया। नेपाल की अस्थिर राजनीति में राजा राजेन्द्र विक्रम शाह युवराज सुरेन्द्र, महारानी लक्ष्मीदेवी सभी अपने–अपने दावेदारी के लिए प्रयत्नशील थे, जिसका लाभ उठाकर जंग बहादुर राणा ने सत्ता पर अधिकार कर लिया और इस भयानक षड़यंत्र में रानी का कृपा पात्र गगन सिंह की हत्या के बाद उसने राजा राजेन्द्र और युवराज तथा महारानी लक्ष्मीदेवी से अलग–अलग समझौता कर लिया। राजा राजेन्द्र अपनी महारानी लक्ष्मी देवी और गगन सिंह के बीच अवैध सम्बन्ध को अपने परिवार के लिए अपमान जनक समझा। कोट दरबार हाल में सभी अधिकारियों राजपरिषद के सदस्यों की आपात बैठक में दो गुटों के भीषण हत्याकाण्ड में सैकड़ों लोगों की निर्मम हत्या की गयी। इस पूर्व नियोजित हत्याकाण्ड में केवल जंगबहादुर राणा और उसके छः भाई ही जीवित बचे। राजा राजेन्द्र बनारस चला गया। कोट हत्याकाण्ड के बाद प्रधानमंत्री जंगबहादुर राणा ने राजतंत्र को सुसुप्तावस्था में डालकर राजा सुरेन्द्र से असीमित अधिकार प्राप्त कर लिया और आगामी 100 वर्षो तक नेपाल में राणाओं का शासन बना रहा। जंगबहादुर राणा सुरेन्द वीर विक्रम को राजा बनाने में सफल रहा।

राणा शासनकाल में ही भारत में 1857 का विद्रोह हुआ। जंगबहादुर राणा ने इस विद्रोह में कंपनी सरकार की सहायता का प्रस्ताव रखा, यद्यपि कंपनी ने इसे स्वीकार नही किया क्योंकि नेपाल में जंगबहादुर राणा की ब्रिटिश समर्थक नीति को लोग पसन्द नहीं करते थे। लार्ड कैनिंग ने जब दिल्ली और तथा अन्य स्थानों पर विद्रोह कुचलने के लिए गोरखा सैनिकों की सहायता मांगी तो गोरखा सेना ने गोरखपुर और लखनऊ को विद्रोहियों से मुक्त कराया, इसके बदले में कंपनी सरकार ने 1816 की सुगौली सन्धि द्वारा प्राप्त अवध के अनेक क्षेत्रों को नेपाल को वापस कर दिया। दूसरी ओर जंगबहादुर राणा ने भी लखनऊ से काफी धन प्राप्त कर लिया था, किन्तु नेपाल में उसे विरोध का सामना करना पड़ा। 1857 के बहुत से विद्रोही नेता नाना साहब, बाला राव, अवध की बेगम, बेनी माधव, गोण्डा के राजा ने नेपाल की तराई में शरण ले रखी थी, जंगबहादुर राणा नाना साहब को अंग्रेजों को सौपना नही चाहता था अतः उन्हें पेंशन भी दिया और वे अपनी स्वाभाविक मृत्यु से नेपाल में ही मृत्यु को प्राप्त हुए जब कि नाना साहब पर 1 लाख रूपये का इनाम था। बेगम हजरत महल भी अपने सैकड़ों क्रांतिकारियों के साथ नेपाल में थी, 1874 में काठमाण्डू में ही उनकी मृत्यु हुयी।[18] तथा अजीमुल्ला की मृत्यु भी नेपाल की तराई में मलेरिया से हुयी।[19] मृत्यु के समय नाना साहब की पत्नी तथा बाला की पत्नी और वाजीराव की दो विधवाये तथा एक पुत्री उपस्थित थी। यह भी कहा जाता है कि नाना साहब के साथ 40 महिलाएं भी थी,[20] काठमाण्डू में यह कहा जाता है कि जंगबहादुर राणा ने अपने महल के निकट उद्यान में इन लोगों को शरण दिया था[21] यद्यपि कम्पनी सरकार द्वारा इस सन्दर्भ में यह भी कहा गया कि जंगबहादुर लालची था और विद्रोही अपने साथ काफी धन ले गये थे, पर्सिवल लैण्डम ने लिखा है कि जंगबहादुर राणा ने बहुत कम मूल्य पर नाना साहब और अवध की बेगम के जवाहरातो को खरीदा था। जंगबहादुर राणा हिन्दू राष्ट्र का प्रधानमंत्री होने के नाते ब्राह्मण नेताओं को परोक्ष रूप से सहायता दिया और 1857 के विद्रोह में यह सहायता कम नही थी।[22] जंगबहादुर राणा ने कम्पनी सरकार के ब्रिटिश रेजीमेन्ट

पर 16 आरोप लगाकर उसे हटाने का प्रयास किया यद्यपि इसके बाद 10 मई 1855 को कंपनी सरकार से भी 10 वर्षो के लिए एक संधि किया जिसमें अपराधियों को लौटाने की व्यवस्था थी। भारत में स्वतंत्रता के पहले ब्रिटिश साम्राज्य ने 1923 में नेपाल को एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में मान्यता दिया तो भारतीयों को भी नेपाल की तराई में व्यापार की अनुमति मिली, दोनों देशों का देशान्तरण होने लगा, दूसरी ओर जब चीन ने भारत में रह रहे नेपालियों को तिब्बत में व्यापार करने की स्वतंत्रता दी तो यह देशान्तर और तेज हो गया और भारत–नेपाल का सम्बन्ध बढ़ने लगा। नेपाल में भारत की स्वतंत्रता तक यही स्थिति बनी रही।

भारत में स्वतंत्रता एवं विभाजन के बाद 1949 में जब चीन में साम्यवादी सरकार बनी तो शीघ्र ही नेपाल में भी राणा शासन समाप्त की ओर अग्रसर हो गया, पुनः राजशाही स्थापित हो गयी, परन्तु चीन में माओत्सेतुग के अधिनायकत्व में चीन का निर्माण, सीमा विस्तार तथा नेपाल में अपना प्रभाव स्थापित भी करना था। दूसरी ओर चीन द्वारा तिब्बत पर आक्रमण ने भारत–नेपाल सम्बन्ध को और महत्वपूर्ण बना दिया तथा नेपाल को भी आशंका थी कि चीन नेपाल में साम्यवाद के विस्तार से उसकी सत्ता को चुनौती दे सकता है। ऐसी स्थिति में भारत द्वारा नेपाल सम्बन्धों पर मित्रता के लिए सन्धि की आधारशिला रखी गयी। 1950 में भारतीय प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने तत्कालीन राणा शासक से मिलकर यह प्रयास किया कि अलोकतांत्रिक राज व्यवस्था को रूपान्तरित किया जाय। अतः 30 जुलाई 1950 को नेपाल की राजधानी काठमाण्डू में प्रधानमंत्री मोहन समशेर जंगबहादुर तथा भारत के राजदूत चन्द्रशेखर नारायण सिंह के द्वारा दोनों देशों की आपसी वार्ता हुई और 1950 में नेपाल शान्ति एवं मित्रता की सन्धि की गयी, सन्धि में यह कहा गया कि दोनों देशों के आवागमन की प्रक्रिया को सरल बनाया जाय, एक दूसरे की अखण्डता, सर्वोच्चता को सम्मान दिया जाय, दोनों देशों में एक दूसरे के नागरिकों को रहने का हक, सम्पत्ति के मालिकाना हक, उद्योग, आर्थिक विभाग में भागीदारी और रियायत का प्राविधान रहेगा तथा इस सन्धि के लागू होने के बाद पूर्व की सन्धिया स्वतः समाप्त हो जायेगी। यह सन्धि दोनों देशों के बीच एक ऐतिहासिक कदम था किन्तु नेपाल में माओवादी इसका छिद्रान्वेषण करते रहे और इसका विरोध भी किया। इस सन्धि के 4 महीने बाद ही नेपाल की राणा सरकार समाप्त हो गयी। नेपाल में पुनः शाह वंश के महाराजा त्रिभुवन वीर विक्रमशाह का राज प्रारम्भ हुआ, परन्तु जब उन पर संकट आया तो वे 1951 में भागकर भारत आये और भारत में नेपाल के विलय का प्रस्ताव भी रखा परन्तु पं0 नेहरू ने अस्वीकार कर दिया। भारत में पाश्चात्य समाजवाद और कम्युनिस्टो को संरक्षण देने से नेपाल में कम्युनिस्ट पार्टियों का विस्तार हुआ सबसे पहले इसकी पहल कामरेड पुष्प लाल द्वारा कम्युनिस्ट पार्टी को स्थापित कर ली गयी थी। दूसरी ओर नेपाल और चीन सरकार से पहला समझौता 1955 में हुआ, नेपाल ने तिब्बत को चीन का आन्तरिक मामला बताया, दोनों देशों में राजदूत सम्बन्ध स्थापित हुए, चीन ने न केवल नेपाल में घुसपैठ किया बल्कि नेपाली किसानों को चीन ने आमंत्रण दिया, अगले साल 1956 में पुनः दोनों देशों ने व्यापारिक समझौता भी किया। 1957 में नेपाल के प्रधानमंत्री चीन गये, जिसे 6 करोड़ भारतीय रूपया देने का आश्वासन दिया गया। 1960 में नेपाल के प्रधानमंत्री बी0वी0 कोईराला को पीकिंग बुलाकर 21 मिलियन डालर की अधिक सहायता दिया गया और एवरेस्ट चोटी तक अधिकार बताया तथा नेपाल की सीमाओं पर भी छेड़छाड़ का बढावा दिया। चीन द्वारा नेपाल पर इस तरह के हस्तक्षेप से भारत ने इसकी आलोचना किया। इस बीच नेपाल नरेश महेन्द्र ने बी0वी0 कोईराला से वार्तालाप करके नेपाल में आपातकाल की घोषणा कर दिया, नेपाल में पंचायती शासन स्थापित हुआ। नेपाल में नेपाली कांग्रेस पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। भारत के तत्कालीन सर्वोदयी नेता जयप्रकाश नारायण ने इसका विरोध किया। परन्तु चाउ–इन–लाई ने राजा महेन्द्र को समर्थन किया। अतः नेपाल का झुकाव चीन की ओर बढ़ता गया।

1962 में भारत–चीन युद्ध के बाद नेपाल के सम्बन्धों को पुनः परिभाषित करने की आवश्यकता महसूस की गई किन्तु नेपाल के अस्वीकार करने पर पुनः सम्बन्धों में दरार आ गयी और 1965 में भारत पाक युद्ध में भी नेपाल ने भारत का समर्थन नहीं किया। भारत के हिन्दूवादी संगठनों ने भारत और नेपाल जैसे हिन्दू राष्ट्र से सांस्कृतिक तथा पारिवारिक सम्बन्ध बनाने का प्रयास किया जिसमें राष्ट्रीय स्वयं सेवक की भूमिका प्रमुख थी। 1963 में गुरू जी श्री माधवराव सदाशिव गोलवलकर की काठमाण्डू यात्रा में महाराजा महेन्द्र से भेंट हुयी थी, उन्होंने महाराजा को भारत आने का निमंत्रण दिया, महाराज ने इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया था। संघ ने इसके लिए पं0 नेहरू और बाद में लालबहादुर शास्त्री से स्वीकृत भी ले लिया। महाराजा 14 जनवरी, 1965 को नागपुर में आने का कार्यक्रम बना चुके थे, किन्तु भारत के नौकरशाहो ने इसे स्थगित कर दिया, सम्भवतः इसमें पं0 नेहरू की तटस्थता के कारण ऐसा हुआ इस पर भारतीय जनमानस में तीखी प्रतिक्रिया हुयी, सभी समाचार पत्रों ने इसे कांग्रेस को कम्युनिष्टों के गोद में ढकेलने का प्रयास माना गया। उस समय समाजवादी नेता राममनोहर लोहिया ने कहा जब वेटिकन सिटी के पोप को इसाई सम्मेलन में शामिल होने की आज्ञा दी जा सकती है तो नेपाल के महाराजा को भी नही रोकना चाहिए। इसे भारत की अदूरदर्शी राजनीति कहा जायेगा क्योंकि अगर महाराज यहां आते तो लोग नेपाली संस्कृति को भारत से जोड़कर देखते। 1975 में जब भारत में इमरजेन्सी लगायी गयी तो कम्युनिष्ट सत्ता में शामिल हो गये, उन्हें शिक्षा आदि महत्वपूर्ण पदों पर रखा गया इसमें प्रोत्साहित नेपाल में भी कम्युनिष्ट विचारधारा से नई–नई अनेकों पार्टिया बनने लगी, 1968 में कामरेड पुष्पलाल तथा 1978 में कामरेड मोहन विक्रम सिंह आदि नेपाल में दर्जनों कम्युनिस्ट पार्टिया बनी। नेपाल की कम्युनिष्ट पार्टियों ने अपना उद्देश्य नेपाल में महाराजा के शासन का अन्त तथा नेपाल में हिन्दू राष्ट्र के स्थान पर धर्म निरपेक्ष राष्ट्र की स्थापना बनाया।

1972 में राजा महेन्द्र की मृत्यु के बाद उनके पुत्र राजा वीरेन्द्र के शासक बनने के बाद 1980 में जनमत समूह द्वारा संवैधानिक परिवर्तन भी हुआ उस समय भारतीय प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी के समय भी नेहरू की तटस्थता और पाश्चात्य सेकुलरवाद की नीति चलती रही इससे नेपाल में हिन्दू कमजोर तथा मुसलमानों को प्रोत्साहन मिला। पाकिस्तान से काफी संख्या में आईएसआई मुसलमान नेपाल पहुचने लगे। वहां हजारों मदरसें बने मुसलमानों की संख्या में 4 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई।[23] आज नेपाल में 12500 मस्जिदें है। इसी प्रकार 1967 तक वहा एक भी इसाई नहीं था, किन्तु 1968 से 25 इसाई से बढ़कर आज 3 लाख इसाई है। इग्लैण्ड, जर्मनी तथा अमेरिका के पादरी भी नेपाल गये, आज वहां 200 चर्च और प्रार्थना गृह तथा 3500 गिरजाघर है। नेपाल में 1981 में 90 प्रतिशत हिन्दू थे जो आज घटकर 70 प्रतिशत हो गये है। नेपाल नरेश वीरेन्द्र विक्रम ने नेपाल को एक शान्ति क्षेत्र घोषित करने के लिए 1975 और 1984 में विश्व राष्ट्रों से प्रार्थना किया था, इसका समर्थन चीन तथा पाकिस्तान ने तथा अनेक देशों ने किया, यद्यपि नेपाली प्रधानमंत्री के0पी0 कोईराला भारत की यात्रा पर आये परन्तु तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने कोई रूचि नहीं दिखायी और इसके बाद बी0पी0 सिंह और चन्द्रशेखर को समय कम मिला, इन्हीं परिस्थितियों में जब पी0वी0 नरसिम्हा राव नेपाल गये तो उनका विरोध हुआ। यद्यपि 1995 में नेपाल में प्रधानमंत्री डॉ0 गिरिजा प्रसाद कोईराला ने कहा कि नेपाल में ऐसे तत्व आ गये है जो भारत नेपाल सम्बन्ध में सुधार नही चाहते है।

1995 में नेपाली प्रधानमंत्री मनमोहन अधिकारी भारत आये तो उन्होंने 1950 की सन्धि में संशोधन की मांग किया परन्तु 1996 में माओवादियों ने जनयुद्ध की घोषणा कर ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी कि नेपाल में पुलिस की गोली से 1000 और 800 से ज्यादा माओवादियों ने हत्याये की, सब मिलाकर लगभग 12000 हत्याये हुयी। भारत में सरकारे बदलती रही, 1996 में अटल बिहारी वाजपेयी और बाद में एच0डी0 देवगौड़ा, इन्द्र कुमार गुजराल प्रधानमंत्री बने। इन्दकुमार गुजाल ने कहा था कि भारत सदैव यह ध्यान रखेगा कि वह बड़ा देश है अतः नेपाल के आर्थिक विकास के प्रति उसकी कर्तव्य भी बड़ा होगा और भारत को यह नही सोचना होगा कि नेपाल उसके लिए क्या कर रहा है।[24] दुर्भाग्य से बाजपेयी जी के शासनकाल में राजा वीरेन्द्र की परिवार सहित हत्या कर दी गयी उनके बाद ज्ञानेन्द्र को शासक बनाया गया शीघ्र ही उनका टकराव वहाँ की राजनैतिक पार्टियों से हुआ।

महाराजा ज्ञानेन्द्र ने 2005 में सारी शक्ति अपने हाथ में लेकर माओवादी दलों को आतंकवादी संगठन घोषित कर दिया। उन्होंने अमेरिका तथा भारत से मदद मांगी किन्तु भारत से मनमोहन सिंह ने सहयोग देने से इंकार कर दिया। राजा ज्ञानेन्द्र अस्थिर और असमजंस में थे, वे चीन की गोद में नही जाना चाहते थे, परन्तु नेपाली कम्युनिष्ट नेता सेकुलरवाद और जनतंत्रात्मक शासन की मांग कर रहे थे, नेपाली पुलिस और माओवादियों में हिंसक संघर्ष होने लगा। भारत ने अभी भी तटस्थता की नीति अपनायी थी दूसरी ओर चीन ने इसे नेपाल का आन्तरित मामला बताकर माओवादियों को प्रोत्साहन दिया। आखिर नेपाल में माओवादी सफल रहे, अप्रैल 2008 में कामरेड पुष्प दहल प्रचण्ड को भारी सफलता मिली, राजा ज्ञानेन्द्र को महल छोड़कर जाने को कहा गया। भारत और चीन की यात्रा के बाद भी कोई हल नही निकला। पशुपतिनाथ के भारतीय पुजारियों को हटा दिया गया। नेपाल में 240 वर्षो के इतिहास में 28 मई 2008 को प्रस्ताव पारित कर नेपाल की संसद ने राजशाही समाप्त की घोषणा कर दिया, गिरिजा प्रसाद कोईराला को प्रधानमंत्री पद से हटा दिया गया 16 फरवरी 2010 को नेपाल के राष्ट्रपति रामवरन यादव भारत की यात्रा पर आये 10 फरवरी सुशील कुमार कोईराला को प्रधानमंत्री बनाया गया।

नेपाल के रिश्तों को नया आयाम देने के लिए द्विपक्षीय सम्बन्धों की नयी शुरूआत के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 3 अगस्त 2014 को नेपाल गये, उन्हें 19 तोपों की सलामी के साथ अभूतपूर्व स्वागत किया गया। 17 साल बाद किसी प्रधानमंत्री का यह दौरा था, इतना भावपूर्व स्वागत पहले कभी नही हुआ था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 10000 करोड़ नेपाली रूपये की रियायती कर्ज उपलब्ध कराने की घोषणा किया। पनबिजली की अपार सम्भावनाएं तथा प्राथमिकताओं के अनुसार नये अनुदान की भी बात कही। नेपाल में माओवादी नेता ने इसे ऐतिहासिक और लाभदायक बताया, नरेन्द्र मोदी ने 1950 की सन्धि पर समीक्षा का वादा भी किया। 18वें दक्षेस शिखर सम्मेलन में श्री नरेन्द्र मोदी ने नेपाली प्रधानमंत्री को H.L.H. मार्क 3 ध्रुव हेलीकाप्टर सौपा। जिसका इस्तेमाल नेपाल सैन्य अभियानों में कर सकेगा।[25] इसी यात्रा में चिकित्सीय सुविधा हेतु नेपाल को 200 विस्तरों का ट्रामा सेन्टर तथा 1000 करोड़ की आर्थिक सहायता तथा दिल्ली, बनारस, पोखरा, काठमाण्डू अत्याधुनिक सुविधाओं वाला बस संचालन का उद्घाटन किया। स्पष्ट है कि भारत नेपाल सम्बन्धों में सुधार के लिए हमें ही पहल करनी होगी। नेपाल इस समय दो बड़े राज्यों के बीच भी अवस्थित होने के नाते वफर स्टेट के रूप में जाना जाता है। दो बड़े राज्य एक दूसरे के दुश्मन होने के नाते नेपाल कभी भारत और कभी चीन की ओर झुकता है वह कभी चीन से आर्थिक सहायता लेता है तो कभी चीनी वार्ता का भय दिखाकर भारत से रियायत चाहता है जैसे नेपाल में 2016 में भूकम्प में मोदी जी ने त्वरित मदद किया किन्तु चीन के डर से कुछ ही दिन बाद नेपाली सरकार ने भारतीय सैन्य राहत कर्मियों को नेपाल छोड़ने के लिए कहा ऐसा चीन के दबाव के कारण ही हुआ। नेपाल परिसंघीय गणराज्य की स्थापना के बाद नई चुनौतियां उत्पन्न हुयी है।

नेपाल में भारतीय निवेश को बढ़ावा देने के लिए यह आवश्यक होगा की विभेदीकरण का प्रतिषेध करने वाली नीति का पालन किया जाये, साथ ही दोनों देशों की अधिसूचना प्रणाली की सुदृढ़ता भी अनिवार्य हो गयी है। परम्परागत सैन्य सुरक्षा के साथ–साथ अब मादक द्रव्यों की तस्करी, लघु शस्त्रों के अवैध व्यापार तथा मानव

दुर्व्यापार की समस्याओं से सुरक्षा के स्वरूप में बदलाव आवश्यक है, भारत नेपाल सीमा सुरक्षा व्यवस्था अनिवार्य हो गया है, परन्तु भारत चीन की सन्तुष्टि का ध्यान रखता और नेपाल भारत और चीन के साथ 'समदूरी सिद्धान्त पर सम्बन्ध विकसित करना चाहता है। दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक एवं धार्मिक भावनाएं जुड़ी है। के0बी0एस0 ओली की चीन यात्रा के बाद नेपाल को ल्हासा से और लुम्बिनी से रेल लाईन पर बात कर चीन भारत पर नेपाल की निर्भरता को समाप्त करना चाह रहा है। श्री नरेन्द्र मोदी के आमंत्रण पर अगस्त 2018 में के0पी0एस0 ओली की भारतीय राजकीय यात्रा निश्चित ही महत्वपूर्ण थी, जिसमें मोतिहारी रेलखण्ड, बीरगंज में चेक पोस्ट, रक्सौल, काठमाण्डू रेल लाईन, कृषि विकास के सुधार आदि की वार्ता महत्वपूर्ण रही। ऐसे प्रयासों से भारत नेपाल के सम्बन्ध को मजबूती मिलेगी और नेपाल अच्छे पड़ोसी के रूप में विकास कर सकेगा आज भारत और नेपाल में बहुत कुछ बदल चुका है।

अध्धयन का उद्देश्य

शोध पत्र का उद्देश्य नेपाल और भारत के सांस्कृतिक और राजनीतिक सम्बन्ध के विषय में जन सामान्य को यह बताना है कि भारत और नेपाल के सम्बन्ध शताब्दियों से एक दूसरे से अनुस्यूत रहे है। अनेक प्रमाण उसके एकात्मकता की पुष्टि करते है यह सम्बन्ध ईस्ट इण्डिया शासनकाल में भी प्रभावित नही हो सका। आज भी नेपाल में गुरू गोरक्षनाथ का वही सम्मान है जो पृथ्वीनारायण के समय था, वे राजस्थान (चित्तौड़) के सिसोदिया वंश के थे। बाद में राणाओं के शासनकाल में चीन के हस्तक्षेप के बाद भी सम्बन्ध बना रहा, बीच में भारत की विदेशी राजनीति का वहां प्रभाव अवश्य पड़ा किन्तु वर्तमान भारत सरकार नेपाल के सम्बन्ध को मजबूत आधार देने के लिए अनेकों समझौते और सहायता के तत्पर है। इसका प्रभाव वफर स्टेट नेपाल पर अवश्य पड़ेगा।

अंत टिप्पणी

1. *धर्मदासानी एम0डी0 : 'इण्डियाज फारेन पालिसी' इण्डियन डिप्लोमेसी इन नेपाल आलेख जयपुर 1975 से उद्धत जवाहर लाल नेहरू।*
2. *भारत की विदेश नीति : वी0पी0 दत्ता विकास पब्लिसिंग हाउस नई दिल्ली पृ0–251*
3. *राष्ट्रीय सहारा नई दिल्ली 12 जून, 2018*
4. *एस0के0 चतुर्वेदी, भारत नेपाल सम्बन्ध डी0के0 पब्लिशर्स नई दिल्ली,1983*
5. *झा एस0के0 आल ईजी पार्टनर्स इण्डिया एण्ड नेपाल इन दी पोस्ट कालोनियल इरा, मानस पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली 1975*
6. *ए'कन्ट्री स्टडी आफ नेपाल' फेडरल रिसर्च कांग्रेस लाइब्रेरी 2005 पृ0–10*
7. *झा एस0के0 आल ईजी पार्टनर्स इण्डिया एण्ड नेपाल इन दी पोस्ट कालोनियल इरा, मानस पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली 1975*
8. *गेरोलों वाचस्पति : भारत के उत्तर पूर्व सीमात देश पृ0–148*
9. *रेग्मी डी0आर0 : एन्शियन्ट एवं मेडुवल नेपाल, काठमाण्डू 1952 पृ0–2*
10. *गोयल श्रीराम, प्राचीन नेपाल का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास वाराणसी, पृ0–15*
11. *स्वयंभू पूराण स्कन्दपुराण नेपाल महात्म्य*
12. *अग्रवाल कृष्णदेव : इम्पारटेन्ट आफ नेपाली संस्कृत इन्स्क्रासम्स राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान प्रकाशन नई दिल्ली 2010 पृ0–54*
13. *उपरोक्त पृ0–50*
14. *वी0ए0 स्मिथ, अशोक, द बुद्धिष्ट एम्परर आफ इण्डिया प्रथम संस्करण 1901 पृ0–70–71*
15. *राधा कृष्ण चौधरी : प्राचीन भारत का सामाजिक राजनीतिक इतिहास पटना 1989 पृ0–239*
16. *चतुर्वेदी एस0के0 : भारत नेपाल सम्बन्ध डी0के0 पब्लिसर्स नई दिल्ली 1983*
17. *लुडविंग एफ स्टीलर एस0जे0 : द राइज आफ दी हाउस आफ गोरखा काठमाण्डू सेकेन्ड एडीसन 1975 पृ0–34*
18. *डॉ0 अरूण शर्मा : वीमेन वार्स आफ 1857 रिवोल्ट : मेरठ जनरल पृ0–53*
19. *डॉ0 एस0एन0 सेन : एट्रीन फिफ्टी सेवन, नई दिल्ली 1957 पृ0–370*
20. *श्रीनिवास बाला जी डार्डिकर 1857 पृ0–196*
21. *प्रो0 आराधना : 'प्रथम मुक्ति समाज के योद्धा नाना साहब' मेरठ जनरल पृ0–144*
22. *डॉ0 अर्शद हुसैन : ब्रिटिश इण्डिया रिलेशन विद किगडम आफ नेपाल*
23. *हरी व सिन्हा हर्ष कुमार, आन्तरिक सुरक्षा विचार विमर्श और विकल्प–2012 प्रत्युष पब्लिकेशन्स दिल्ली पृ0–347*
24. *टाइम्स आफ इण्डिया 27 नवम्बर 1997*
25. *अमर उजाला–नैनीताल–26 नवम्बर, 2014 पृ0–18*